International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

वाल्मीकि रामायणे पर्वतानां वर्णनं

पूनम रानी
असिस्टेंट प्रोफेसर
सिंह राम मैमोरियल कॉलेज
उमरा, हांसी, हिसार

भूमिका :

भूगोल वह प्राकृतिक थाल्हा है, जिसमें एक विशेष प्रकार की संस्कृति, एक विशेष काल में, अंकुरित–विकसित, पुष्पित और फलवती होती है। कवि अथवा कलाकार कथ्य का वर्णन अथवा पात्रों का चरित्र–चित्रण, एक विशेष देश–काल, परिस्थिति के अन्तर्गत ही करते है। काल का संबंध तो सांस्कृतिक वातावरण से है, जो प्रकृति निर्मित है तथा देश का संबंध भूगोल से है, जो प्रकृति निर्मित है। इस प्रकार प्रकृति और पुरूष की सह क्रीड़ा, भूगोल और संस्कृति का घनिष्ठ संबंध जोड़ देती है। एक विशेष प्रकार की संस्कृति का विकास, एक विशेष प्रकार की भौगोलिक परिस्थिति में होता है। अतएव वाल्मीकि युगीन मानव–संस्कृति के अध्ययन के लिए तात्कालिक भूगोल का चित्रण भी अपेक्षित है।

भौगोलिक सन्दर्भ :

वाल्मीकि रामायण में वर्णित पर्वत, नदी, सागर, सरोवर, जनपद नगर, ग्राम आदि के विवरण से यह स्पष्ट होता है, कि महर्षि वाल्मीकि का भौगोलिक ज्ञान अत्यन्त व्यापक था। सुग्रीव सीता की खोज नियमित अपनी सेना को चार भागों में विभाजित कर चारों दिशाओं में भेजते है। सीता की खोज संबंधी इन वर्णनों से भारत, आधुनिक पाकिस्तान, बर्मा, लंका, दक्षिणी पूर्वी एशिया आदि देशों के विभिन्न जनपदों, पर्वतों, नदियों के विवरण प्राप्त हो जाते हैं। विश्वामित्र राम–लक्ष्मण के साथ अयोध्या से सिद्धाश्रम और फिर मिथिला की यात्रा करते है। इस यात्रा द्वारा उन प्रदेशों के पर्वतों एवं नदियों के विवरण भी प्राप्त हो जाते हैं। वशिष्ठ द्वारा प्रेषित दूत, अयोध्या से केकय प्रदेश, गिरिव्रज (आधुनिक पंजाब) तक यात्रा करते है, उस यात्रा के मध्य स्थित पर्वत, नदी, जनपद, नगर ग्राम का उल्लेख चित्रवत प्रस्तुत किया गया है। इसी प्रकार राम–लक्ष्मण की वन यात्रा द्वारा, जो अयोध्या से आरंभ होकर चित्रकूट, दण्डकारण्य, पपां किष्किंधा से होती हुई लंका तक पूर्ण होती है– दक्षिण

भारत की भौगोलिक स्थिति का परिज्ञान हो जाता है। इस प्रकार वाल्मीकि रामायण में वृहद भारत का विस्तृत भौगोलिक चित्र प्रस्तुत हो जाता है।

वाल्मीकि का भारत :

वाल्मीकि–रामायण में वर्णित तात्कालिक भारत की लगभग 50 नदियों, 40 पर्वतों, अनेक नगरों के आधार पर वाल्मीकि युगीन भारत की सीमा का निर्देश हो जाता है। वाल्मीकि–रामायण में उत्तर पश्चिम प्रदेश के पुष्पकलावती (पुरूषपुर) आधुनिक पेशावर, तक्षशिला (आधुनिक पाकिस्तान), गिरिव्रत (आधुनिक पंजाब) आदि नगरों, सिंध, वितस्ता, चन्द्रभागा, इरावती, विपाक्षा, शतद्रु, सरस्वती, दृश्द्वती आदि नदियों तथा गंधार, केकय, मद्र, वाल्मीक, सौबीर, मरूभूमि आदि जनपदों का उल्लेख हुआ है। इससे यह स्पष्ट होता है कि तात्कालिक भारत की उत्तरी–पश्चिमी सीमा के अन्तर्गत आधुनिक पाकिस्तान और अफगानिस्तान देश सम्मिलित है।

भारत के पूर्वी भाग में कामरूप, प्राग्ज्योतिष, किरात, बंग, मगध आदि जनपदों लोहित (आधुनिक ब्रह्मपुत्र) नदी का वर्णन प्राप्त होता है। इससे स्पष्ट होता है कि तात्कालिक भारत की पूर्वी सीमा बर्मा, आसाम तथा नागालैंड तक विस्तृत थी।

वाल्मीकि युगीन भारत की दक्षिणी सीमा वही थी, जो आधुनिक भारत की है। केवल लंका भारत के अंतर्गत था। उत्तर वैदिक काल तक तो आर्यगण, गोदावरी नदी तक पहुँचे थे, किन्तु वाल्मीकि रामायण–युग में कृष्णा, तुंगभ्रदा, अर्धगंगा, ताम्रपर्णी आदि नदियों के वर्णन द्वारा यह सिद्ध होता है, कि इस युग में आर्यगण सुदूर दक्षिण में पहुँच गए थे। इस प्रकार समस्त भारत आर्य मय हो गया है।

प्राकृतिक विभाजन :

भारतवर्ष के प्राकृतिक विभाजन की निश्चित रूपरेखा वाल्मीकि रामायण में नहीं मिलती है। दशरथ तथा राम के अश्वमेघ यज्ञ में उदीच्य, प्राच्य, दक्षिणपथ तथा पर्वताश्रयी राजाओं के सम्मिलित होने का उल्लेख मिलता है। जिससे भारत के प्राकृतिक विभाजन की ओर संकेत हो जाता है। क्षेत्रीय विभाजन की यह परम्परा आगे चलकर पुराणों में अधिक विकसित रूप से दिखायी पड़ती है। पुराणों में भारतवर्ष में 9 खण्डों में विभाजन का विस्तृत

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

विवेचन मिलता है। ये खण्ड निम्नलिखित है– 1) इन्द्र द्वीप (ब्रह्मा) 2) कसेसमान 3) ताम्रार्ण 4) गमस्तमान 5) नागद्वीप 6) सौमयद्वीप 7) गन्धर्व 8) वरूण 9) मध्यप्रदेश। वाल्मीकि रामायण में इन खण्डों में कुछ का परोक्ष रूप में संकेत मिल जाता है।

पर्वत

शिशिर :

यह किष्किन्धा के पूर्व दिशा में विद्यमान था। रामायण के अनुसार इसके शिखर अति विशाल एवं आकाशस्पर्शी थे। वहां देवता, दानव निवास करते थे। सुग्रीव वानरों को शिशिर पर्वत पर सीता के अन्वेषण की आज्ञा देते हैं।[1] आधुनिक सन्दर्भ में इसे बाली द्वीप (जावा) का एक पर्वत कहा जा सकता है।

ऋषभपर्वत–

अनेक वृक्षों से परिमण्डित यह पर्वत, पूर्व में क्षीरोद समुद्र के मध्य वर्तमान था। इस पर सुदर्शन नाम एक दर्शनीय सरोवर था। जो देवता, यक्ष, किन्नर, अप्सराओं से सेवित था। इसे श्वेत पर्वत भी कहते थे, क्योंकि इस पर्वत पर चांदी के (श्वेत) अनेक वृक्ष विद्यमान थे। सुग्रीव के अनुसार यह सुदर्शन सरोवर सदैव चाँदी (रजत्) के पुष्पित कमल से आपूर्ण था, जिनके केसर स्वर्ण के थे।[2] यह आधुनिक श्वेत सागर के मध्य कोई पर्वत रहा होगा, जो उत्तरी ध्रुव के निकट स्थित है।

यामुन–

यह पर्वत भारत के पूर्व में स्थित था, जहाँ सुग्रीव वानरों को सीतान्वेषणार्थ भेजते है। रामायण में इसका वर्णन यमुना नदी के साथ हुआ हैं इससे ऐसा प्रतीत होता है कि पूर्वदिशा में कालिन्दी के तटभाग पर यह पर्वत कहीं विद्यमान था।[3]

कनक पर्वत :

पूर्व दिशा में जलोद सागर के उत्तर में तेरह योजन दूरी पर यह सुवर्णमय पर्वत स्थित था। इस पर्वत पर पृथ्वी को धारण करने वाले श्वेत कमल–पत्र वाले सर्वगण निवास

करते थे। पर्वत पर विद्यमान अनन्तदेव को सब देवता प्रणाम करते थे।[4] इसी पर्वत की एक वेदी पर तीन शाखाओं वाला सोने का एक ताल वृक्ष था, जो महाप्रभु की ध्वजा का कार्य करता था। ऐसा कहा जाता था कि बड़े–बड़े देवताओं ने इस पताका को पूर्व दिशा के अवधि के रूप में स्थापित किया था। इसे 'जातरूप' शिला भी कहते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि यह स्वर्णपत्र कोई और पर्वत न होकर, आधुनिक सुमेरू पर्वत ही है, जो स्वर्ण का माना जाता है।

उदयाचल :

पूर्व दिशा में सुवर्णमय उदयाचल विद्यमान था। इसके शिखर सौ योजन ऊँचे और आकाश का स्पर्श करने वाले थे। यह अनेक वृक्षों से गुम्फित एवं दर्शनीय था तथा अनेक वेदियों से युक्त था। इस पर एक योजन लम्बा और दश योजन ऊँचा सोमनस शिखर विद्यमान था। वामनावतार में विष्णु ने त्रैलोक्य को नापते समय, इस पर अपना पहला पैर रखा था। परिक्रमा करने के पश्चात्, श्रान्त सूर्य इसके उतुङ् शिखरो पर विश्राम लेता है। उदयाचल के समीप सुदर्शन द्वीप विद्यमान था।[5] कोष के अनुसार यह पर्वत पूर्व दिशा में विद्यमान है, जहाँ से सूर्य और चन्द्रमा का उदय माना जाता है।[6] ?

मन्दराचल –

रामायण के अनुसार यह पूर्व दिशा में विद्यमान था। इस पर्वत–शिखर पर अनेक नगर बसे हुए थे– जहाँ सुग्रीव वानरों को सीता की खोज–निमित आज्ञा देते है। इस पर सुवर्ण वर्ण के, लौह सुदर्श मुख वाले, वेग से दौड़ने वाले मनुष्य भक्षी किरात नामक जाति निवास करती थी।[7] यह पूर्व दिशा में मगध देश का कोई पर्वत शिखर था।

पद्माचल –

यह पर्वत किसी दिशा विशेष में स्थित था। इसका स्पष्ट उल्लेख तो नहीं मिलता, किन्तु रामायण में उदयाचल के साथ ही इस पर्वत का वर्णन यह सिद्ध करता है कि सम्भवतः पूर्वदिशा में ही उदयाचल पर्वत के समीप ही कहीं यह विद्यमान था। इस पर्वत पर भयानक तथा भीमकाय अनेक वानर निवास करते थे, जिन्हें सुग्रीव सीतान्वेषणार्थ जाने की आज्ञा देते है।[8]

हेमगिरी –

यह पर्वत रामायण के अनुसार किष्किन्धा के पश्चिम में सिन्धु और समुद्र संगम पर स्थित था, जो आकाश स्पर्शी शत शृंगों से युक्त तथा विशालकाय वृक्षों से आवृत था। इसके रमणीय चट्टानों पर, पक्षधारी सिंह निवास करते थे। जो तिमिमत्स्य और बड़े–बड़े हाथियों को पकड़ कर अपने नीड़ में रख लेते थे। उन सिंहों के नीड में पालित हाथी, बड़े प्रसन्न और अभिमानी थे। वे मेघ के समान भयंकर गर्जन और पर्वत पर इच्छानुसार विचरण करते थे।[9] हेमगिरी भी, स्वर्ण पर्वत के सदृश सुमेरू पर्वत के लिए अथवा उसके किसी शिखर भाग के लिए प्रयुक्त हुआ है, जो पूर्व दिशा में विद्यमान था।

परियात्र पर्वत –

रामायण के अनुसार किष्किन्धा के पश्चिम में समुद्र के मध्य सौ योजन वितीर्ण, परियात्र पर्वत स्थित था, जिस पर अग्नितुल्य भयानक, पराक्रमी, चौबीस करोड़ तपस्वी गन्धर्व रहते थे। सुग्रीव कहता है–पराक्रमी वानरों को वहां उपद्रव न करना चाहिए क्योंकि अत्यंत वेगवान गन्धर्व उसके फलों की रक्षा करते हैं। वहाँ, आप लोग सीता को ढूंढ़ने का प्रयत्न करें।[10] परियात्र का सर्वप्रथम उल्लेख बोधायन (1–1–15) में मिलता है। स्कन्द पुराण में इसे भारतवर्ष के मध्य में स्थित कुमारी खंड का दूरतम् छोर बताया है। पार्टिजर के मत से वर्तमान भोपाल के पश्चिम में स्थित विन्ध्य भाग तथा अरावली पर्वतों के प्राचीन नाम था।[11] इसी को टालेमी कहा है।[12]

चक्रवान पर्वत –

किष्किन्धा के पश्चिम दिशा में, समुद्र के चौथे भाग में चक्रवान पर्वत विद्यमान था। रामायण के अनुसार यहाँ विश्वकर्मा ने सहस्त्र भाग वाला चक्र बनाया था। यहाँ पंचजन और हयग्रीव दानव को मारकर विष्णु ने चक्र और शंख प्राप्त किया था। सुग्रीव समस्त वानरों को इस पर्वत की खोज का आदेश देते है।[13]

वराह पर्वत–

किष्किन्धा के पश्चिम दिशा में, अगाध समुद्र के मध्य चौसंठ योजन विस्तृत और सम्पन्न 'वराह' नाम पर्वत विद्यमान था। उस पर्वत पर सुवर्णमय प्राग्ज्योतिषपुर नामक नगर विद्यमान था। इस पर दुष्टात्या 'नरक' दानव रहता था। इसमें सुरम्य शिखर और विशाल कन्दराएँ थी।[14] सुग्रीव वानरों को सुरम्य शिखरों एवं विशाल गुफाओं में सीता का अन्वेषण करने की आज्ञा देते है।

मेरू पर्वत–

किष्किन्धा के पश्चिम दिशा में, अनेक पर्वतों से आवृत्त, विशाल, पर्वतराज मेरू स्थित था, जो स्वर्ण का था। सूर्य ने प्रसन्न होकर उसे वर दिया था कि तुम पर जो निवास करेगा, वह स्वर्ण मय हो जाएगा। देवताओं द्वारा पूजित सूर्य, इसी पर्वत पर अस्त होता है। वाल्मीकि के अनुसार यह पर्वत एक हजार मील विस्तृत है। इस पर विश्वकर्मा द्वारा निर्मित एक भव्य भवन स्थित है। आदित्यगण नित्य इस पर्वत पर सूर्य की अर्चना करते हैं। दस हजार योजन विस्तृत इस महापर्वत को, सूर्य अर्द्धमुहूर्त में पार कर जाते है। अस्ताचल और मेरू पर्वत के मध्य, दस सिर वाला एक सोने का तालवृक्ष था, जिसके नीचे एक चित्रित वेदी बनी हुई थी।[15]

अर्वुद पर्वत–

भारत के पश्चिम में अर्वुद पर्वत विद्यमान था, जिसे आजकल आबू पर्वत कहते है। यह पुष्कर के पश्चिम में विद्यमान है।

अस्ताचल पर्वत–

पश्चिम दिशा में यह पर्वत स्थित था, जिस पर सूर्य अस्त है। वाल्मीकि के अनुसार पश्चिम दिशा में मेरू पर्वत से आगे लगभग आठ सहस्त्र–स्वर्ण पर्वत विद्यमान थे। उनके शिखर सुरम्य और गुफाएँ विशाल थी। वे नित्य प्रवाहित झरनों और वन्य पशुओं से युक्त थे।[16]

मेनाक पर्वत–

पश्चिम दिशा में मेनाक पर्वत स्थित था, जिस पर मय दानव, अपना भव्य–भवन बनाकर रहता था।[17] इस पर्वत पर यत्र–तत्र अश्वमुखी स्त्रियों के गृह भी निर्मित थे। यह पर्वत लंका और भारत के मध्यवर्ती समुद्र में स्थित है।

कालपर्वत–

उत्तर दिशा में सोमाश्रम से आगे 'कालपर्वत' स्थित था।[18] जिसके उच्च श्रृंगों तथा विकट गुफाओं में लोकवन्दिता, महाभागाा रामपत्नी सीता को खोजने का आदेश, सुग्रीव वानरों को देते है। हिमालय के एक शिखर को 'कालपर्वत' कहते है।

सुदर्शन पर्वत–

उत्तर दिशा में कालपर्वत से आगे सुदर्शन पर्वत स्थित था, जहाँ वानरों को सुग्रीव सीता–खोज की आज्ञा देते है।[19] इसे भी हिमालय पर्वत का एक श्रृग्ड् कह सकते हैं जो 'सुदर्शन पर्वत' कहलाता था।

मानस पर्वत :

उत्तर दिशा में ही कैलाश के आगे मानस पर्वन विद्यमान था, जिसे देखने मात्र से ही प्राणी की समस्त इच्छाएँ पूर्ण हो जाती थी। वृक्ष रहित अत्यन्त दुर्गम इस पर्वत पर केवल पक्षी रहते थे। यहाँ प्राणियों, देवताओं एवं राक्षसों की भी पहुँच नहीं थी। सुग्रीव सभी वानरों से कहते हैं कि इस अगम्य पर्वत पर जाकर, आप लोग सीता की खोज करें।[20] सम्भव है 'मानस' नामक सरोवर से युक्त होने के कारण, यह पर्वत 'मानस पर्वत' कहलाया, जो उत्तर दिशा में कैलाश पर्वत पर स्थित हिमालय का एक शिखर भाग था।

सुदामा पर्वत–

केकय प्रदेश से चलकर उत्तर पूर्व में, वाह्लीक देश से आगे सुदामा पर्वत स्थित था, जिसे भरत, अयोध्या लौटते हुए पर करते हैं।[21]

कैलाश पर्वत–

उत्तर दिशा में श्वेतवर्ण का कैलाश पर्वत था। इस पर एक विशाल सरोवर विद्यमान था, जिसमें सदैव कमल खिले रहते थे और हंस कारण्डव पक्षी विहार करते थे। अप्सराओं द्वारा सेवित, इस पर्वत पर स्वर्ण मंडित मेघ सदृश उज्जवल, विश्वकर्मा द्वारा निर्मित, कुबेर का भव्य भवन स्थित था, जिसमें सब प्राणियों से नमस्कृत, धन दाता वैश्रवण (कुबेर), यक्षों के साथ निवास करते थे।[22] आज भी इस पर्वत को कैलाश कहते हैं जो हिमालय पर्वत की एक चोटी है।

क्रौंचपर्वत–

उत्तर दिशा में कैलाश पर्वत से आगे क्रौंचपर्वत स्थित था। सुग्रीव वानरों को निर्देश देते है, कि उसकी दुर्गम कन्दराओं से सावधानी से प्रवेश करना। उन कन्दराओं में देवताओं से पूजित, सूर्य सदृश तेजस्वी, दिव्य महात्मा रहते है। इस पर्वत की गुफाओं तथा छोटे–बड़े सभी शिखरों पर सुग्रीव, वानरों को सीता के अन्वेषण का आदेश देते है।[23] ऐसा प्रतीत होता है, यह हिमालय पर्वत का कोई शिखर रहा होगा, जिसे उस समय ''क्रौंचपर्वत'' कहते थे।

सोमगिरि–

उत्तर दिशा में समुद्र के मध्य, 'सोमगिरि' नामक सुर्णमय विशाल पर्वत था। इन्द्रलोक तथा ब्रह्मलोक निवासी सभी देवता, उस पर्वत को देखा करते थे। वहाँ सूर्य का प्रकाश तो नहीं पहुँचता था, किन्तु वह पर्वत, अपने असाधारण प्रकाश से सूर्य–प्रकाश सदृश प्रदेश को प्रकाशित अवश्य करता रहता था। वहाँ विश्वात्मा एकादशमूर्ति भगवान शंकर तथा ब्रह्मर्षियों के साथ ब्रह्मा, भी निवास करते थे।[24] 'सोमगिरि' उत्तरी ध्रुव की पर्वतमाला (उत्तरी कुरू) का नाम था।

मलय–

यह पर्वत सघन चन्दभवन से युक्त दक्षिण दिशा में विद्यमान था। रामायण के अनुसार इस पर तेजस्वी महर्षि अगस्त का आश्रम था। कोष के अनुसार भारत के दक्षिण में एक पर्वत श्रृंखला, जहाँ चन्दन के वृक्ष बहुतायत से पाए जाते है–मलयगिरि कहलाती है।

दुर्दर–

यह पर्वत भारत के दक्षिण दिशा में विद्यमान था। वर्तमान संदर्भ में भारत के दक्षिण में विद्यमान नीलगिरि, पहले 'दुर्दर' पर्वत कहलाता था।

महेन्द्र पर्वत–

यह दक्षिण दिशा में अगस्त्य ऋषि द्वारा समुद्र के बीच में स्थापित, अत्यन्त सुन्दर पर्वत था, जो अनेकविध पुष्पित वृक्षों, लताओं से शोभित था। देवताओं, ऋषि, यक्ष, अप्सराएँ इस पर नित्यप्रति रमण करती थी और सिद्ध–चरणों का समूह नित्य वहाँ विद्यमान रहता था। इस पर्वत पर इन्द्र भी आकर आन्नद मग्न होते थे। वर्तमान संदर्भ में यह पर्वत दक्षिण में गंजाम जिले में स्थित है।

माल्यवान–

यह पर्वत दक्षिण दिशा में विद्यमान था, जो किष्किन्धा के समीप प्रस्तावना–पर्वत–माला का एक शिखर भाग था। इसी शिखर पर राम–लक्ष्मण अपना निवास–स्थान बनाते है। इसकी प्राकृतिक सुषमा परम मनोहर एवं आकर्षक थी।[24] किष्किन्धा के समीप प्रस्त्रयण पर्वत माला का एक शिखर भाग, माल्यवान कहलाता था।

चित्रकुट–

भारत के दक्षिण दिशा में, अनेक पर्वतों से परिमण्डित चित्रकूट नामक सुरम्य पर्वत प्रदेश था। राम ने अपने वनवास की कुछ अवधि, इसी पर्वत पर व्यतीत की थी। इसी पर्वत से होकर मन्दाकिनी नदी बहती थी।

उपसंहारः

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

संस्कृत साहित्य के अनुपम ग्रन्थ रामायण से ही लौकिक कविता का आरम्भ माना जाता है। भारतीय साहित्य में निर्विवाद रूप से, वाल्मीकि को आदि कवि और रामायण को भारतीय संस्कृति को अनुशासित करने वाला आदिकाव्य एवं महाकाव्य माना गया है। रामायण के अनुशीलन के पश्चात् साधारण से साधारण पाठक भी वाल्मीकि द्वारा स्थापित प्राकृतिक चित्रणों को हृदयांगम करने में स्वयं को समर्थ पाता है और प्रकृति की रमणीयता से आह्लादित होता है।

रामायण में इन्ही दो संयोग है। राम शब्द जो रमणीयता है और अयन (अयन का अर्थ है चाल या गति) शब्द में जो गतिशीलता है–दोनों के मणि काचंन संयोग ही रामायण है। रामायण और राम नाम भारतीय जनजीवन में इतने एकरूप हो गए हैं कि कई प्रदेशों में परस्पर मिलने पर लोग आज भी राम–राम कहकर अभिवादन करते हैं।

आदिकवि महर्षि वाल्मीकि की अमर कृति रामायण न केवल संस्कृत साहित्य की ही, अपितु प्राचीन भारतीय संस्कृति और सभ्यता की भी एक अमूल्य निधि है। एक और जहाँ वह संसार में समृद्धतम् संस्कृत साहित्य के आदि काव्य के स्थान पर प्रतिष्ठित है, वहाँ दूसरी ओर उसको संसार में प्राचीनतम भारतीय आर्य संस्कृति और सभ्यता के एक सजीव महाकाव्य होने का भी गौरव प्राप्त है। महर्षि वाल्मीकि ने प्रसिद्ध रामकथा के माध्यम से पर्वतों का एक विलक्षण, भव्य और अद्भूत चित्र प्रस्तुत किया है, जो प्राचीन होते हुए भी नवीन मानवीय और दिव्य है। समूचि प्रकृति, मानों इस महाकाव्य में साकार हो उठी है। परम्परा से प्राप्त ऐतिहासिक रामकथा को उपजीव्य मानकर न जाने कितने सहस्र काव्य देववाणी संस्कृत और अन्य भाषाओं में लिखे गए, परन्तु पर्वतों के सौन्दर्य वर्णन की दिव्यता, भव्यता और रमणीयता केवल वाल्मीकि रामायण में ही पाई जाती है।

पाठ्क हृदय पर जितनी अमिट छाप वाल्मीकि रामायण के प्रकृति वर्णन की पड़ी है उतनी शायद ही किसी और ग्रन्थ की पड़ी हो। उन्होंने चित्रपुट का वर्णन विद्यार्थियों के चरणों की केसर से चिकने और लाल रत्नशिला तल की तरह स्वच्छ तथा घाटियों के वृक्षों के विकसित् कुसुमों के साथ किया है। इन्होंने कनक, उदयांचल, मन्दरांचल, पद्मांचल, हेमगिरि, मलयांचल, किष्किन्धा पर्वत के साथ–साथ इसमें लगभग 52 पर्वतों का वर्णन प्राप्त होता है।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

सन्दर्भ ग्रंथ सूची–

1. वा. रा.– 4/40/31
2. वा. रा.– 4/39/29–31 तक।
3. वा. रा.– 4.39.19
4. वा. रा.– 4.39.45–47 तक
5. वा. रा.– 4.39.45–54 तक
6. उदयगिरिवनालीबालमन्दार पुष्पम्।। उद्भट सं.हि. कोष, वा. शि. आप्टे।
7. वा. रा.– 4.39.24–26 तक
8. वा. रा.– 4.36.4
9. वा. रा.– 4.41.12–14 तक
10. वा. रा.– 4.41.16–19 तक
11. ला : माउ. ऑफ इण्डिया, पृ0 17–19 तक
12. मैक्रिडिलः टालेमी पृ. 355
13. वा. रा.– 4.41.21–23 तक
14. वा. रा.– 4.41.25–26 तक
15. वा. रा.– 4.41.32–40 तक
16. वा. रा.– 4.41.27–31 तक
17. वा. रा.– 4.43.31
18. वा. रा.– 4.42.14–15
19. वा. रा.– 4.42.16
20. वा. रा.– 4.42.27–28
21. वा. रा.– 2.62.12
22. वा. रा.– 4.42.19–23 तक
23. वा. रा.– 4.42.24–28 तक
24. वा. रा.– 4.27.52